Amire Ahle Sunnat Ke 150 Irshadat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 304
Weekly Booklet : 304

अमीरे अहले सुन्नत हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ के मुख़्तलिफ़ फ़रामीन का मजमूआ

अमीरे अहले सुन्नत के 150 इर्शादात

सफ़हात 20

(क़िस्त : 3)

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **अमीरे अहले सुन्नत के 150 इर्शादात**

सिने त़बाअ़त : ज़िल क़ा'दह **1444** हि., जून **2023** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**अमीरे अहले सुन्नत के 150 इर्शादात**" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अमीरे अहले सुन्नत के 150 इर्शादात

दुआ़ए ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़ह़ात का रिसाला : "**अमीरे अहले सुन्नत के 150 इर्शादात**" पढ़ या सुन ले उसे अमीरे अहले सुन्नत के सदके़ नेकी की राह पर चला और दीनो दुन्या की ख़ूब बरकतें अ़त़ा फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा कमाल है : "اِذَا نَسِیْتُمْ شَیْئًا فَصَلُّوْا عَلَیَّ تَذْکُرُوْہُ اِنْ شَآءَ اللّٰہ या'नी जब तुम कोई चीज़ भूल जाओ तो मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ लिया करो اِنْ شَآءَ اللّٰہ वोह चीज़ तुम्हें याद आ जाएगी।" (القول البدیع، ص427)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

बुज़ुर्गों के इर्शादात की अहम्मिय्यत

ह़ज़रते लुक़्मान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपने बेटे को नसीह़त करते हुए फ़रमाया : उ़लमा के साथ लाज़िमी त़ौर पर बैठा करो और ह़िक्मत वालों का कलाम सुना करो क्यूं कि **अल्लाह** पाक ह़िक्मत के नूर से मुर्दा दिल को उसी त़रह़ ज़िन्दा करता है जिस त़रह़ मुर्दा ज़मीन को बारिश के क़त़रों से। (معجم کبیر، 8/199، حدیث:7810)

याद रहे ! इ़ल्मो ह़िक्मत भरी बातों से जहां फ़िक्रो नज़र के दरीचे रोशन होते हैं वहीं इ़ल्मे दीन सीखने का सवाब भी हाथ आता है।

اَلْحَمْدُلِلّٰه ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी अस्लाफ़ (गुज़श्ता बुज़ुर्गों) के त़रीक़े पर अ़मल करते हुए आ़म फ़ह्म अन्दाज़ में क़ुरआनो ह़दीस की रोशनी में न सिर्फ़ शर्ई सुवालात के जवाबात इर्शाद फ़रमाते हैं, बल्कि बा'ज़ अवक़ात क़ीमती त़िब्बी मा'लूमात से भी रू शनास फ़रमाते, मुतअ़द्दद गुथ्थियों को सुलझाते (या'नी मुश्किलात को ह़ल फ़रमाते), मुख़्तलिफ़ इ़ल्मी मदनी फूलों के ज़रीए उसे और मुन्फ़रिद बनाते और देखने सुनने वालों के दिलों में ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की शम्अ़ भी फ़रोज़ां (रोशन) फ़रमाते हैं । आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मजलिस वा'ज़ो नसीह़त का ख़ज़ीना और गुमराहों के लिये हिदायत का ज़ीना है । आइये ! मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर आप के इर्शादाते आ़लिया मुलाह़ज़ा कीजिये :

अमीरे अहले सुन्नत के 150 इर्शादात

﴾1﴿ इस्लाम अम्न और राह़त का पैग़ाम देता है ।

(17 शव्वाल 1435 ब मुत़ाबिक़ 14 अगस्त 2014)

﴾2﴿ कोई काम करना हो तो (उसे) सन्जीदा (Serious) लेना होगा, इन्सान सन्जीदगी से कोई काम करे तो मन्ज़िल पा लेता है ।

(20 शव्वाल 1435 ब मुत़ाबिक़ 16 अगस्त 2014)

﴾3﴿ ह़स्बे ज़रूरत रोज़ी पर क़नाअ़त करना सीखें ।

(4 ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1435 हि., 30 अगस्त 2014)

﴾4﴿ फ़ुज़ूल बातों से इस लिये भी बचें कि फ़ुज़ूल बात करते करते कहीं गुनाहों भरी गुफ़्तगू में न पड़ जाएं । (4 ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1435 हि., 30 अगस्त 2014)

﴾5﴿ जिस मुरीद में दीनी ख़ूबियां जितनी ज़ियादा होंगी, पीर अपने उस मुरीद से ज़ियादा महब्बत करेगा। (18 जुल क़ा'दतिल हराम 1435 हि., 13 सितम्बर 2014)

﴾6﴿ वालिदैन अपनी औलाद पर येह ज़ाहिर न करें कि हम अपने फुलां बेटे या बेटी से ज़ियादा महब्बत करते हैं वरना दीगर एहसासे कमतरी का शिकार होंगे और येह उन के लिये बाइसे हलाकत (बाइसे नुक़्सान) होगा।

(18 जुल क़ा'दतिल हराम 1435 हि., 13 सितम्बर 2014)

﴾7﴿ सोशल मीडिया पर अपने बने हुए एकाउन्ट्स पर अपनी फ़ोटो लगाना मुझे अच्छा नहीं लगता, अपनी तसावीर ख़त्म कर के हुब्बे जाह का ख़ातिमा करने की कोशिश करें। (18 जुल क़ा'दतिल हराम 1435 हि., 13 सितम्बर 2014)

﴾8﴿ जितना ज़ियादा नेकी करने में शैतान वस्वसे डाले, उतनी ही ज़ियादा हिम्मत से नेकी करनी चाहिये। (18 जुल क़ा'दतिल हराम 1435 हि., 13 सितम्बर 2014)

﴾9﴿ बच्चों को जानवरों के साथ हुस्ने सुलूक का ज़ेहन देना चाहिये।

(30 जुल क़ा'दतिल हराम 1435 हि., 25 सितम्बर 2014)

﴾10﴿ अपने नेक आ'माल पर मुत्मइन नहीं होना चाहिये बल्कि **अल्लाह** पाक की ख़ुफ़्या तदबीर से डरते रहना चाहिये।

(30 जुल क़ा'दतिल हराम 1435 हि., 25 सितम्बर 2014)

﴾11﴿ पीर की तवज्जोह हासिल करने के लिये पीर की इताअ़त की जाए।

(30 जुल क़ा'दतिल हराम 1435 हि., 25 सितम्बर 2014)

﴾12﴿ कुतुब तस्नीफ़ करना आसान काम नहीं, जो इस का अह्ल हो उसी को येह काम करना चाहिये। (फ़र्स्ट जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 26 सितम्बर 2014)

﴾13﴿ अच्छे दोस्त को पहचानने के लिये उस के साथ सफ़र करें या कोई मुआमला मसलन ख़रीदो फ़रोख़्त वग़ैरा करें।

(फ़र्स्ट जुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 26 सितम्बर 2014)

﴾14﴿ जब तक हम ने "अल्फ़ाज़" न बोले, हमारे हैं, जब निकल गए तो दूसरों के हो गए, वोह जो चाहें करें। (3 जुल हिज्जतिल ह़राम 1435 हि., 28 सितम्बर 2014)

﴾15﴿ सह़ाबए किराम अपने बच्चों को बहादुरी की तरबियत दिया करते थे। हमारे बच्चे शेर की त़रह़ बहादुर होने चाहिएं।

(4 जुल हिज्जतिल ह़राम 1435 हि., 29 सितम्बर 2014)

﴾16﴿ सब मिल कर मुल्क की ता'मीर और मस्जिद भरो तह़रीक में हमारा साथ दें, हमारा बच्चा बच्चा नमाज़ी बन गया तो मुल्क भी ख़ुशह़ाल हो जाएगा। (5 जुल हिज्जतिल ह़राम 1435 हि., 30 सितम्बर 2014)

﴾17﴿ सुन्नत में अ़ज़मत है।

(10 जुल हिज्जतिल ह़राम 1435 हि., 5 अक्तूबर 2014)

﴾18﴿ मुआ़शरे की ग़लत़ रुसूमात में शामिल हो जाना मर्दानगी नहीं बल्कि मर्द वोह है जो मुआ़शरे को अपने पीछे चलाए।

(11 जुल हिज्जतिल ह़राम 1435 हि., 6 अक्तूबर 2014)

﴾19﴿ किफ़ायत शिआ़री अपनाना सीख लें और अगर एक दिन का खाना बच जाए तो फेंकने की बजाए दूसरे दिन खा लें।

(16 जुल हिज्जतिल ह़राम 1435 हि., 11 अक्तूबर 2014)

﴾20﴿ बुज़ुर्गों से निस्बत रखने वाली हर शै "तबर्रुक" है।

(16 जुल हिज्जतिल ह़राम 1435 हि., 11 अक्तूबर 2014)

﴾21﴿ वालिदैन से ख़िदमत लेने की बजाए इन की ख़िदमत करें।

(16 जुल हिज्जतिल ह़राम 1435 हि., 11 अक्तूबर 2014)

﴾22﴿ मुआ़फ़ी मांगने से वेल्यू (Value) डाउन (Down) नहीं अप (Up) होती है। (23 जुल हिज्जतिल ह़राम 1435 हि., 18 अक्तूबर 2014)

﴾23﴿ फ़ुज़ूल से बचो ताकि गुनाह में न पड़ जाओ ।

(23 ज़ुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 18 अक्तूबर 2014)

﴾24﴿ किसी को ''मनवाना'' हमारा काम नहीं ''समझाना'' काम है ।

(23 ज़ुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 18 अक्तूबर 2014)

﴾25﴿ अपनी नेकियों पर ए'तिमाद न करें बल्कि **अल्लाह** की रह़मत पर नज़र रखें । (23 ज़ुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 18 अक्तूबर 2014)

﴾26﴿ मिल कर खाना खाते हुए ऐसा अन्दाज़ इख़्तियार न करें कि दूसरों को घिन आए, मुहज़्ज़ब से मुहज़्ज़ब तरीन अन्दाज़ होना चाहिये ।

(24 ज़ुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 19 अक्तूबर 2014)

﴾27﴿ रंग बातों से कम और सोह़बत से ज़ियादा चढ़ता है ।

(25 ज़ुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 20 अक्तूबर 2014)

﴾28﴿ मुख़्लिस शख़्स हज़ार पर्दों में छुप कर भी नेक काम करे, **अल्लाह** पाक उस को लोगों में मश्हूर कर देता है ।

(25 ज़ुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 20 अक्तूबर 2014)

﴾29﴿ ख़ौफ़े ख़ुदा की एक अहम अ़लामत येह है कि बन्दा **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानियों से बचे । (25 ज़ुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 20 अक्तूबर 2014)

﴾30﴿ मिलन सार शख़्स से लोग मह़ब्बत करते हैं ।

(25 ज़ुल हिज्जतिल हराम 1435 हि., 20 अक्तूबर 2014)

﴾31﴿ बक़र ईद हो या मीठी ईद, हमें डर डर कर और कम खाना चाहिये ।

(फ़र्स्ट मुह़र्रमुल हराम 1436 हि., 25 अक्तूबर 2014)

﴾32﴿ मेरा तजरिबा है कि फ़ी ज़माना मुसल्मानों की ग़ालिब अक्सरिय्यत को दुरुस्त नमाज़ पढ़ना नहीं आती, न मख़ारिज दुरुस्त हैं और न अरकान दुरुस्त अदा करते हैं । (फ़र्स्ट मुह़र्रमुल हराम 1436 हि., 25 अक्तूबर 2014)

﴾33﴿ हमारे हर काम का महवर (मक़्सद) रिज़ाए इलाही होना चाहिये।

(फ़र्स्ट मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 25 अक्तूबर 2014)

﴾34﴿ हमारी ज़िन्दगी का मक़्सद **अल्लाह** व रसूल को मनाना है, मगर हम लोगों को मनाने में ख़्वार (ज़लील) हो रहे हैं।

(फ़र्स्ट मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 25 अक्तूबर 2014)

﴾35﴿ मालिकान अपनी गाड़ियों में लिख कर लगा दें : इस गाड़ी में गाने बाजे और फ़िल्में वग़ैरा नहीं दिखाई जातीं, मुसाफ़िर (Passengers) इसरार न करें। (3 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 27 अक्तूबर 2014)

﴾36﴿ रिज़्क़े हलाल के हुसूल के लिये वोह कारोबार कीजिये जिस में दीन की ख़िदमत भी कर सकें। (3 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 27 अक्तूबर 2014)

﴾37﴿ बुराइयों से बचने का शुऊ़र बुराई से बचने का ज़रीआ़ है।

(4 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 28 अक्तूबर 2014)

﴾38﴿ इमाम मुआ़शरे के मुअ़ज़्ज़ज़ीन हैं, इन का एह़तिराम कीजिये। इन की ख़िदमत करें मगर मुसाफ़ह़े के दौरान रक़म न दिया करें बल्कि लिफ़ाफ़े में डाल कर तन्हाई में दें। (5 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 29 अक्तूबर 2014)

﴾39﴿ ख़ादिमे मस्जिद मुआ़शरे का मज़्लूम तरीन फ़र्द है, इस के साथ भी माली तआ़वुन करें। (5 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 29 अक्तूबर 2014)

﴾40﴿ दुकानों वग़ैरा के नाम मुतबर्रक न रखे जाएं क्यूं कि इन की तौहीन हो सकती है मसलन ग़ौसिया टेलर्ज़ वग़ैरा बल्कि दुन्यावी नाम रखे जाएं।

(5 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 29 अक्तूबर 2014)

﴾41﴿ अफ़्सोस ! आज कल ग़फ़्लत का दौर दौरा है, ख़ौफ़ की चीज़ें मसलन बादल का गरजना और बिजली का कड़कना वग़ैरा में लोग तौबा इस्तिग़फ़ार

के बजाए उछल कूद करते और लुत्फ़ उठाते हैं।

(5 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 29 अक्तूबर 2014 खुसूसी)

﴾42﴿ गुनाह से बचने के लिये गुनाह के अस्बाब को ख़त्म करना होगा।

(6 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 30 अक्तूबर 2014 खुसूसी)

﴾43﴿ **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी करना मुसल्मान का नहीं, शैतान का काम है। (7 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 31 अक्तूबर 2014)

﴾44﴿ मुसल्सल नेकी की दा'वत देते रहें, शर्मो झिजक ख़त्म होती जाएगी।

(7 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 31 अक्तूबर 2014 खुसूसी)

﴾45﴿ जिस बात से गुनाहों का दरवाज़ा खुले उस से इज्तिनाब करें।

(8 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., फ़र्स्ट नवम्बर 2014)

﴾46﴿ क़ब्रिस्तान जाते रहिये कि इस से इब्रत हासिल होती है।

(8 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., फ़र्स्ट नवम्बर 2014)

﴾47﴿ जिस (मुआलिज) के इलाज से फ़ाएदा न हो तो उसे बुरा भला न कहें, शिफ़ा देने वाला तो **अल्लाह** करीम है। (9 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 2 नवम्बर 2014)

﴾48﴿ जिस चीज़ की निस्बत हरमैने तय्यिबैन (मक्का व मदीना) और बुज़ुर्गों से हो जाए, शरीअत के दाएरे में रहते हुए उस के लिये बेहतर से बेहतरीन अल्फ़ाज़ इस्ति'माल कीजिये। (9 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 2 नवम्बर 2014)

﴾49﴿ हर उस बात और हरकत से बचिये जिस से किसी मुसल्मान की दिल आज़ारी हो सकती हो। (10 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 2 नवम्बर 2014)

﴾50﴿ हर फ़र्द को आलिम बनने की कोशिश करनी चाहिये, आलिम होना बहुत बड़ी सआदत है। (18 रबीउल आख़िर 1436 हि., 7 फ़रवरी 2015)

﴾51﴿ उस्ताज़ और किताबों का ज़ियादा से ज़ियादा एहतिराम किया जाए, اِنْ شَآءَاللّٰه इल्म की रूह हासिल होगी। (11 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 4 नवम्बर 2014)

﴾52﴿ अगर इमामे मस्जिद मिलन सार व बा अख़्लाक़ हो तो वोह दीन की बहुत ख़िदमत कर सकता है । ऐसा इमामे मस्जिद महल्ले का बेताज बादशाह होता है । (11 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 4 नवम्बर 2014 ख़ुसूसी)

﴾53﴿ किसी मुसल्मान को दूसरे मुसल्मान से बदज़न नहीं करना चाहिये । (11 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 4 नवम्बर 2014 ख़ुसूसी)

﴾54﴿ अगर तलबा के अख़्लाक़ दुरुस्त हो जाएं और उन में सहीह मा'नों में सन्जीदगी आ जाए तो येह दीन की बहुत ख़िदमत कर सकते हैं । (15 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 8 नवम्बर 2014 ख़ुसूसी)

﴾55﴿ दीनी किताबें सस्ती बेची जाएं ताकि ज़ियादा से ज़ियादा लोग इस्तिफ़ादा करें, येह दीनी मुरव्वत (अख़्लाक़) का तक़ाज़ा है । (16 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 9 नवम्बर 2014 ख़ुसूसी)

﴾56﴿ दाढ़ी और इमामा ऐसी ने'मतें हैं जो इन्सान में मौजूद बुराइयां दूर करती हैं । (21 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 15 नवम्बर 2014 ख़ुसूसी)

﴾57﴿ मोटर साइकिल पर ट्रिपल सुवारी (तीन का बैठना) क़ानूनी व अख़्लाक़ी जुर्म और जान के लिये ख़तरा है । (21 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 15 नवम्बर 2014 ख़ुसूसी)

﴾58﴿ मां बाप का इलाज अपना पेट काट कर (या'नी कम खा कर गुज़ारा कर के) भी करना चाहिये । (21 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 15 नवम्बर 2014 ख़ुसूसी)

﴾59﴿ जो नेकी करना चाहते हैं उन को सन्जीदा (Serious) होना ज़रूरी है, सिर्फ़ "चाहना" काफ़ी नहीं । (29 मुहर्रमुल हराम 1436 हि., 22 नवम्बर 2014)

﴾60﴿ जब कोई तबीअत पूछे तो जवाब में اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن कहा जाए, बच्चों को भी सिखाया जाए । (7 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 29 नवम्बर 2014)

﴾61﴿ मुझे बचपन से नमाज़े बा जमाअ़त पढ़ने का जज़्बा था।

(7 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 29 नवम्बर 2014)

﴾62﴿ ख़ामोश रहने में दुन्या व आख़िरत के फ़वाइद हैं।

(7 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 29 नवम्बर 2014)

﴾63﴿ दा'वते इस्लामी का चेनल अच्छी अच्छी निय्यतों से देखना इबादत है, क्यूं कि येह ख़ालिस दीनी चेनल है।

(7 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 29 नवम्बर 2014)

﴾64﴿ ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا की शान, सितारों और मिट्टी के ज़र्रों से ज़ियादा है। (16 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 6 दिसम्बर 2014)

﴾65﴿ तंगदस्ती के अस्बाब में से येह भी है कि मां बाप को नाम ले कर पुकारा जाए। (16 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 6 दिसम्बर 2014)

﴾66﴿ मुख़ात़ब से उस के मक़ामो मर्तबे के मुत़ाबिक़ अच्छे अल्फ़ाज़ से बात कीजिये। (16 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 6 दिसम्बर 2014)

﴾67﴿ अस्ल नेक वोही है जो **अल्लाह** पाक के हां भी नेक हो, महज़ शोहरत होना काफ़ी नहीं। (21 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 13 दिसम्बर 2014)

﴾68﴿ दा'वते इस्लामी ''अ़मल'' की तह़रीक है, रस्मी (Formality) नहीं।

(21 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 13 दिसम्बर 2014)

﴾69﴿ नाम होने (या'नी शोहरत) में भी इम्तिह़ान है।

(21 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 13 दिसम्बर 2014)

﴾70﴿ हर एक को उस की नफ़्सियात के मुत़ाबिक़ नेकी की दा'वत दी जाए। (28 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 20 दिसम्बर 2014)

﴾71﴿ काश ! ऐसा हो जाए कि जब हम बोलना चाहें तो थोड़ा सा रुक जाएं, सोचें, फिर बोलें। (28 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 20 दिसम्बर 2014)

﴾72﴿ किसी मुसल्मान पर ज़बाने त़ा'न न खोली जाए।

(28 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 20 दिसम्बर 2014)

﴾73﴿ ह़ाफ़िज़ को सारा साल क़ुरआने मजीद की तिलावत करते रहना चाहिये ताकि मन्ज़िल पक्की रहे। (28 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 20 दिसम्बर 2014)

﴾74﴿ ह़त्तल इम्कान ऐसी फ़्लाइट या बस में सफ़र करें जिस में किसी नमाज़ का वक़्त न आए। (28 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 हि., 20 दिसम्बर 2014 ख़ुसूसी)

﴾75﴿ अपने बच्चों को शेर बनाओ, दा'वते इस्लामी के रिसाले पढ़ाओ, भूतों परियों की कहानियों से बचाओ। (2 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 24 दिसम्बर 2014)

﴾76﴿ लोग उ़मूमन कह देते हैं कि **अल्लाह** पाक ने यूं फ़रमाया है, क़ुरआन में यूं है, जो कि बहुत ग़लत़ अन्दाज़ है। जब तक सो फ़ीसद यक़ीन या किसी मुफ़्ती या मुस्तनद आ़लिम से तस्दीक़ न कर लें तो अपनी त़रफ़ से यूं न कहा करें। (2 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 24 दिसम्बर 2014)

﴾77﴿ मोमिन नर्म त़बीअ़त और नर्म ज़बान वाला होता है।

(4 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 26 दिसम्बर 2014)

﴾78﴿ नर्म मिज़ाज शख़्स से लोग मह़ब्बत करते हैं।

(4 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 26 दिसम्बर 2014)

﴾79﴿ बात़िन को उजला और नया करने के लिये सच्ची तौबा कर लीजिये।

(5 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 27 दिसम्बर 2014)

﴾80﴿ जान बूझ कर नमाज़ तर्क करने से दिल मैला होता है।

(5 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 27 दिसम्बर 2014)

﴾81﴿ मुसल्मान जहां भी हों, इस्लाम के उसूलों के पाबन्द हैं।

(5 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 27 दिसम्बर 2014)

﴾82﴿ जुलूसे मीलाद में नियाज़ को लोगों की त़रफ़ फेंकने के बजाए, हाथों में दिया करें। (5 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 27 दिसम्बर 2014)

﴾83﴿ जुलूसे मीलाद में इस त़रह़ पुर वक़ार और मुअद्दब अन्दाज़ में शिर्कत करें कि गुमराह भी देखे तो सह़ीह़ राह पर आ जाए।

(5 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 27 दिसम्बर 2014)

﴾84﴿ अस्ल ह़ाफ़िज़े क़ुरआन वोह है जो क़ुरआन के अह़काम माने और अ़मल करे। (6 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 28 दिसम्बर 2014)

﴾85﴿ मोबाइल फ़ोन के नुक़्सानात इस के फ़वाइद से ज़ियादा हैं।

(8 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 30 दिसम्बर 2014)

﴾86﴿ रोज़ाना एह़तिसाब करना चाहिये कि ज़िन्दगी का एक क़ीमती दिन गुज़र गया। (9 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 31 दिसम्बर 2014)

﴾87﴿ तारीख़े दुन्या के मुत़ालए़ से येह बात मा'लूम होती है : "इन्क़िलाब" हमेशा एक ही लाता है, बक़िय्या लोग उस एक के मुआ़विन होते हैं।

(10 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., फ़र्स्ट जनवरी 2015)

﴾88﴿ चराग़ां और बुज़ुर्गाने दीन की नियाज़, सुन्नियों का शिआ़र है।

(10 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., फ़र्स्ट जनवरी 2015)

﴾89﴿ जो हमारे हाथ में है उसे तो कोई छीन सकता है मगर जो मुक़द्दर में है वोह कोई नहीं छीन सकता। (11 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 2 जनवरी 2015)

﴾90﴿ मसाजिद को आबाद करने का त़रीक़ा येह है कि जब भी नमाज़ पढ़ने जाएं, किसी नए शख़्स पर इन्फ़िरादी कोशिश कर के साथ लेते जाएं। मस्जिद में दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की तरकीब बनाएं, मस्जिद में दिल लगाएं नीज़ वहां बैठ कर ज़िक्रो अज़्कार किया करें। (11 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 2 जनवरी 2015)

﴾91﴿ दिल समुन्दर की त़रह़ वसीअ़ होना चाहिये, जिस का दिल बार बार दुख जाता हो वोह दीन तो क्या दुन्या का काम भी नहीं कर सकता, उस के दोस्त भी बहुत थोड़े होते हैं। (11 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 2 जनवरी 2015)

﴾92﴿ काम्याब होना चाहते हो तो दिलों में इ़श्क़े मुस्त़फ़ा की शम्अ़ फ़रोज़ां कर लो। (11 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 2 जनवरी 2015)

﴾93﴿ उस डॉक्टर से इ़लाज करवाइये जो अमानत दार और ख़ौफ़े ख़ुदा वाला हो। (11 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 2 जनवरी 2015)

﴾94﴿ नेक आ'माल का ह़क़ीक़ी आ़मिल, हज़ारों लाखों में पहचाना जाता है। (12 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 3 जनवरी 2015)

﴾95﴿ दीन पर अ़मल करने से वोह इ़ज़्ज़त मिलती है कि वुज़रा बल्कि सद्र भी रश्क करते होंगे। (12 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 3 जनवरी 2015)

﴾96﴿ बा'ज़ अवक़ात किसी नेक शख़्स के पास बैठने से तक़्दीर बदल जाती है। (17 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 8 जनवरी 2015)

﴾97﴿ मदनी मुज़ाकरा मा'लूमात का ख़ज़ाना है।

(17 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 8 जनवरी 2015)

﴾98﴿ ह़ुसूले इ़ल्मे दीन बहुत अहम इ़बादत है।

(17 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 8 जनवरी 2015)

﴾99﴿ मदनी मुन्नियों को भी कभी कभी मदनी बुरक़अ़ पहनाना चाहिये ताकि बड़ी होने से पहले ही पर्दे का ज़ेह्न बने।

(19 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 10 जनवरी 2015)

﴾100﴿ किसी मुसल्मान के बारे में न कहा जाए कि "हलाक हो गया" बल्कि "इन्तिक़ाल कर गया" कहना बेहतर है।

(19 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 10 जनवरी 2015)

﴾101﴿ अगर इमाम व मुअज़्ज़िन मिलन सार और मीठे मीठे हों तो लोग इन के इर्द गिर्द होंगे। (19 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 10 जनवरी 2015)

﴾102﴿ इमाम व मुअज़्ज़िन को अपनी ग़ुर्बत पर फ़ाक़ा कर लेना चाहिये, मगर किसी मालदार के सामने हाथ नहीं फैलाना चाहिये।

(19 रबीउ़ल अव्वल 1436 हि., 10 जनवरी 2015)

﴾103﴿ अपने दिल में इ़श्क़े रसूल का चराग़ जलाइये, दुन्या व आख़िरत में काम्याबी होगी। (2 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 22 जनवरी 2015)

﴾104﴿ आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की बात हमारे लिये ह़र्फ़े आख़िर है। (3 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 23 जनवरी 2015)

﴾105﴿ गुनाहों के अ़ज़ाबात से वाक़िफ़िय्यत होगी तो उन से बचने का ज़ेह्न बनेगा। (4 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015)

﴾106﴿ बन्दा इतने मेह्रबान रब की ना फ़रमानी कैसे करे जो ला ता'दाद ने'मतों से नवाज़ता है ? (4 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015)

﴾107﴿ उ़मूमन झाड़ने वाले सेठ से, नोकर वफ़ा नहीं करता।

(4 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015)

﴾108﴿ मीठे बोल में ऐसा सेह्र (जादू) है कि सरकश (ना फ़रमान), मुत़ीअ़ (फ़रमां बरदार) हो जाए। (4 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015)

﴾109﴿ तीखे बोल में ऐसा ज़ह्र है कि औलाद ना फ़रमान हो जाए।

(4 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015)

﴾110﴿ बिला इजाज़ते शर्ई, दिल आज़ार अन्दाज़ से घूर कर देखना भी गुनाह है। (4 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015)

﴾111﴿ जज़्बा सच्चा हो तो काम्याबी क़दम चूम लेती है।

(4 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015)

﴾112﴿ जब किसी काम की पूछगछ न हो तो वोह पहले ठन्डा (सुस्त) और फिर ख़त्म हो जाता है। (4 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015 ख़ुसूसी)

﴾113﴿ अगर आप ने किसी की इस्लाह़ की कोशिश की और वोह सुन्नतों का आ़मिल बन गया तो गोया आप ने उस की आने वाली नस्लों की इस्लाह़ कर दी। (4 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015 ख़ुसूसी)

﴾114﴿ दा'वते इस्लामी के चेनल की ने'मत से भरपूर फ़ाएदा उठाएं और इस को देखने की दा'वत देते रहें। (4 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 24 जनवरी 2015 ख़ुसूसी)

﴾115﴿ उ़र्स मनाने की रूह़ येह है कि जिन का उ़र्स मना रहे हैं उन की सीरत पर भी अ़मल करें। (5 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 25 जनवरी 2015)

﴾116﴿ जिस त़रह़ खाने की ह़िर्स (लालच) की जाती है, इस से ज़ियादा नमाज़ व नेकियों की ह़िर्स कीजिये। (5 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 25 जनवरी 2015)

﴾117﴿ शुरूअ़ से ही बच्चों को ज़ियादा खाने पीने और अच्छे अच्छे लिबास से बे रग़बत किया जाए। (5 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 25 जनवरी 2015)

﴾118﴿ अच्छी निय्यत हो तो किसी के दीनी नुक़्सान पर दिल जलाना कारे सवाब है। (5 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 25 जनवरी 2015 ख़ुसूसी)

﴾119﴿ शादी में भी शरीअ़त के अह़काम ही की पाबन्दी की जाए। ग़ैर शर्ई रुसूमात में रिश्तेदारों की बात न मानी जाए, रिश्तेदार न जन्नत में दाख़िल कर सकते हैं न दोज़ख़ में डाल सकते हैं।

(5 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 25 जनवरी 2015 ख़ुसूसी)

﴾120﴿ मुफ़्ती बहुत अ़क़्ल मन्द होता है।

(6 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 26 जनवरी 2015)

﴾121﴿ नाम ले कर पुकारना सुन्नत है।

(6 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 26 जनवरी 2015 ख़ुसूसी)

सालिह़ीन के क़ुर्ब में दफ़्न होना (बड़ी) सआ़दत है।

(7 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 27 जनवरी 2015)

﴾122﴿ वोह बड़ा बद नसीब है जिस पर इस्लाह़ करने वालों का दरवाज़ा बन्द हो। (7 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 27 जनवरी 2015)

﴾123﴿ येह ज़ेह्न बना लीजिये कि मुझे कोई मारे या धक्के दे, मैं ने दा'वते इस्लामी का दीनी माह़ोल नहीं छोड़ना, बल्कि दा'वते इस्लामी से ऐसे चिपक जाएं, कोई टुकड़े टुकड़े कर के भी जुदा न कर सके।

(7 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 27 जनवरी 2015 ख़ुसूसी)

﴾124﴿ बुज़ुर्गाने दीन का फ़ैज़ ह़ासिल करना चाहते हैं तो इन की सीरत पर अ़मल करें। اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم इतना फ़ैज़ मिलेगा कि दूसरों को तक़्सीम करेंगे।

(8 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 28 जनवरी 2015)

﴾125﴿ कोई किसी भी ना गवार अन्दाज़ में सुवाल करे, हमें सब्रो तह़म्मुल से उस का अह़्सन (अच्छे) अन्दाज़ में जवाब देना चाहिये।

(8 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 28 जनवरी 2015)

﴾126﴿ किसी भी गुनाह से सुकून नहीं मिलता।

(8 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 28 जनवरी 2015 ख़ुसूसी)

﴾127﴿ ह़राम माल में बरकत नहीं होती, किसी न किसी त़रह़ हाथ से निकल जाता है। (8 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 28 जनवरी 2015 ख़ुसूसी)

﴾128﴿ हुब्बे जाह (इ़ज़्ज़तो शोहरत की मह़ब्बत) बुरी बला है, इस में दुन्या व आख़िरत की तबाही है। (8 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 28 जनवरी 2015 ख़ुसूसी)

﴾129﴿ हमें **अल्लाह** पाक के लिये जीना और उसी के लिये ही मरना है।

(8 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 28 जनवरी 2015 ख़ुसूसी)

﴾130﴿ जुल्म, आख़िरत का अंधेरा है।

(8 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 28 जनवरी 2015 ख़ुसूसी)

﴾131﴿ अगर हम कमा हक़्क़ुहू फ़ुज़ूल बातों से बचने में काम्याब हो जाएं तो येह **अल्लाह** पाक की (बड़ी) ने'मत है।

(8 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 28 जनवरी 2015 ख़ुसूसी)

﴾132﴿ एक दिन के बच्चे से भी तू तड़ाक़ से बात न की जाए।

(8 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 28 जनवरी 2015 ख़ुसूसी)

﴾133﴿ जो आप से "तू" कह कर बात करता है, आप उस के साथ भी "आप, जी, जनाब" से गुफ़्तगू किया करें।

(8 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 28 जनवरी 2015 ख़ुसूसी)

﴾134﴿ अगर कोई सह़ीह़ मा'नों में मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करे तो वोह नेक व परहेज़ गार बन जाएगा। (8 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 28 जनवरी 2015 ख़ुसूसी)

﴾135﴿ ग्यारहवीं वाले (ग़ौसे आ'ज़म) के दामन से वाबस्ता हो जाएं तो वोह बारहवीं वाले आक़ा (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तक पहुंचाएंगे।

(10 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 30 जनवरी 2015)

﴾136﴿ आख़िरत के ए'तिबार से क़ब्र पहली मन्ज़िल है।

(10 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 30 जनवरी 2015)

﴾137﴿ गुनाह ईमान लेवा हो सकता है और (इस से) ईमान ज़ाएअ़ होने का ख़त़रा बढ़ जाता है। (10 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 30 जनवरी 2015)

﴾138﴿ गुनाहों की बीमारी, बदन की बीमारियों से ज़ियादा तश्वीश नाक है। (16 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 5 फ़रवरी 2015)

﴾139﴿ जिस का बेटा बे अ़मल हो उस को उस के बेटे की बे अ़मली का त़ा'ना देना दिल आज़ारी है। (16 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 5 फ़रवरी 2015)

﴾140﴿ सब से बड़ी मुसीबत कुफ़्रो शिर्क है।

(16 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 5 फ़रवरी 2015)

﴾141﴿ डॉक्टर और दुकानदार नमाज़ के वक़्त अपनी दुकान वग़ैरा पर एक बोर्ड आवेज़ां कर के नमाज़े बा जमाअ़त अदा किया करें। उस बोर्ड पर नुमायां लिखा हो "वक़्फ़ए नमाज़" और इस के नीचे येह तह़रीर हो "मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है"। (16 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 5 फ़रवरी 2015)

﴾142﴿ लज़्ज़ते इ़श्क़े रसूल ला ज़वाल दौलत है।

(16 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 5 फ़रवरी 2015)

﴾143﴿ तहज्जुद पढ़ने वाले के चेहरे पर नूर होता है।

(16 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 5 फ़रवरी 2015 ख़ुसूसी)

﴾144﴿ मस्जिद की सजावट लाइटों से नहीं, नमाज़ियों से है।

(17 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 6 फ़रवरी 2015)

﴾145﴿ अगर तमाम लोग किफ़ायत शिआ़री से बिजली इस्ति'माल करें तो मुल्क भर में लोड शेडिंग में कमी आ सकती है।

(17 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 6 फ़रवरी 2015)

﴾146﴿ जो बारगाहे इलाही में झुकता है, बुलन्दी पाता है।

(17 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 6 फ़रवरी 2015)

﴾147﴿ सुब्ह़ के ख़ास फ़ज़ाइल हैं, तुलूए़ सुब्ह़ ता तुलूए़ आफ़्ताब **अल्लाह** रिज़्क़ तक़्सीम फ़रमाता है। (17 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 6 फ़रवरी 2015)

﴾148﴿ मोबाइल फ़ोन को राबिते़ का आला बनाइये, इसे तफ़रीह़ के लिये इस्ति'माल न कीजिये। आज कल मोबाइल गुनाहों का आला बन चुका है।

(17 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 6 फ़रवरी 2015)

﴾149﴿ जब भी कोई ह़दीसे पाक बयान करें तो उस में अपनी त़रफ़ से कोई लफ़्ज़ न मिलाएं। (17 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 6 फ़रवरी 2015 ख़ुसूसी)

﴾150﴿ जज़्बाती आदमी अच्छा काम बहुत अच्छा करता है और मन्फ़ी काम बहुत बुरा करता है। (17 रबीउ़ल आख़िर 1436 हि., 6 फ़रवरी 2015 ख़ुसूसी)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मलफ़ूज़ात में से एक मदनी गुलदस्ता

सुवाल : बा ह़या बनने का नुस्ख़ा इर्शाद फ़रमा दीजिये ?

जवाब : ह़या हर शख़्स में होती है, किसी में कम होती है और किसी में ज़ियादा होती है। यहां तक कि कोई ग़ैर मुस्लिम भी हो तो उस में भी कुछ न कुछ ह़या ज़रूर होती है, वरना कपड़े क्यूं पहनते !! ह़या है जभी तो कपड़े पहनते हैं। अलबत्ता मुसल्मान की ह़या की अपनी ही एक शान है।

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की ह़या का तो क्या कहना ! आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ चार दीवारी में कपड़े तब्दील करते हुए भी ह़या के मारे सिमट जाते थे। (مسند امام احمد، 1/160، حدیث:543) हमें भी अपनी ह़या का मे'यार चेक करना चाहिये। अभी तो बिल्कुल शरीफ़ बन कर ह़या के साथ बैठे हुए हैं, लेकिन मौक़अ़ ब मौक़अ़ हमारी ह़या का क्या ह़ाल होता होगा। ह़दीसे पाक में है : ह़या जितनी भी हो अच्छी है। (مسلم، ص46، حدیث:157)

अफ़्सोस येह है कि हमारी एक ता'दाद वहां ह़या नहीं करती जहां ह़या करनी चाहिये और वहां ह़या करती है जहां ह़या नहीं करनी चाहिये। जहां गुनाह होते हैं वहां ह़या करनी होती है, इसी त़रह़ बे पर्दगी और बद निगाही में ह़या करनी होती है कि मेरा रब मुझे देख रहा है, मेरा क्या बनेगा !! ह़या का सब से ज़ियादा ह़क़ येही है कि हम **अल्लाह** पाक से ह़या करें, मगर हमारा ह़ाल येह है कि हम गुनाह के कामों में ह़या नहीं करते। इस के बर अ़क्स बा'ज़ अवक़ात जहां नेकी का काम होता है वहां مَعَاذَ اللّٰہ हमें शर्म आ जाती है। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 5/269)

अगले हफ़्ते का रिसाला